नौहा 1

शब्बीर का वो बेटा मरने को जा रहा है

0. शब्बीर का वो बेटा मरने को जा रहा है,
   सुग़रा वतन में जिसका सेहरा सजा रही है।

   अपनी फुफी से रन की रुखसत वो मांगता है,
   सुग़रा वतन में जिसका सेहरा सजा रही है।

1. मिटने को है जहाँ से तस्वीर मुस्तफा की,
   काबू में अब नहीं है हालत शह-ए-हुदा की,
   नज़दीक बस अजल है कुछ लम्हा रह गया है।
   सुग़रा वतन में जिसका ....

2. आऊंगा मैं ना वापस उसको भी ये पता है,
   मक़तल से बाप को वो मुड़ मुड़ के देखता है,
   हसरत से बाप भी तो बेटे को देखता है,
   सुग़रा वतन में जिसका ....

3. एहसास में जमाए भाई पे है निगाहें,
   अकबर की ले रही है ये दूर से बलाएँ,
   वह खाक-ए-कर्बला पे करवट बदल रहा है।
   सुग़रा वतन में जिसका ....

4. अर्श-ए-बरीं से तारे हसरत से तोड़ती है,
   अकबर के वास्ते वो लड़ियों में गूंधती है,
   उसको नहीं खबर कि नैज़ा उसे लगा है।
   सुग़रा वतन में जिसका ....

5. राहों में जिसकी सुग़रा शम्मा (शमा) जला रही है,
   दिन रात दिल ही दिल में दुल्हा बना रही है,
   वह एड़ियाँ ज़मीं पर भाई रगड़ रहा है।
   सुग़रा वतन में जिसका ....

6. जिसके लिए मचलती है सोच कर ये सुग़रा,
   बांधुंगी एक दिन मैं भाई के सर पे सेहरा,
   वह तो अजल का रन में सेहरा पहन चुका है।
   सुग़रा वतन में जिसका ....

7. फरज़न्द-ए-नौजवाँ के लाशे पे जा के मौला,
   कुछ सोचते हैं दिल में रोते हैं शाह-ए-वाला,
   कहते हैं चाँद मेरा खूँ में नहा चुका है।
   सुग़रा वतन में जिसका ....

8. नौ-शाह जब बनेगा ये सोचती है सुग़रा,
छुप जाएगा अखी का फूलों से सारा चेहरा,
मालूम क्या कि उसको घेरे हुए कज़ा है।
सुग़रा वतन में जिसका ....

9. दिल में सजा रही है फूलों से जिसका चेहरा,
करती थी जिसकी खातिर ये एहतेमाम सुग़रा,
मक़तल से उसका लाशा खैमे में आ रहा है।
सुग़रा वतन में जिसका ....

10. पूरी तमन्ना होगी गुलज़ार होगा ये घर,
आएगा जब पलट कर परदेस से बरादर,
लेकिन उसे खबर क्या नरगे में वह घिरा है।
सुग़रा वतन में जिसका ....

11. लाशे पे शाह उसके आँसू बहा रहे हैं,
बच्चों के साथ मिल कर लाशा उठा रहे हैं,
गुलज़ार हसरतों का पामाल हो चुका है।
सुग़रा वतन में जिसका ....

12. *अम्मार* ये बहन से ऐ काश कोई कहता,
जिसका पिरो रही है तू हसरतों से सेहरा,
बाँधेगी किसके सर पर अकबर तो मर चुका है।
सुग़रा वतन में जिसका ....